International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

# कुंवर नारायण की कविताओं में मानवीय संवेदनाएँ और आधुनिक चिंतन

## डॉ. मुरली सिंह ठाकुर

सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
डॉ. सी. व्ही. रमन वि ववविद्यालय
करगी रोड कोटा, जिला–बिलासपुर (छ.ग.)

**सारांश :**
हिन्दी कविता के आधुनिक परिदृश्य में कुंवर नारायण का नाम एक ऐसे चिंतनशील कवि के रूप में लिया जाता है, जिन्होंने जीवन, समाज, इतिहास और मनुष्य के अस्तित्व से जुड़े गहन प्रश्नों को अत्यंत संवेदनशील और बौद्धिक दृष्टि से देखा। उनकी कविताएँ केवल भावनात्मक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि एक दार्शनिक खोज हैं– एक ऐसा विमर्श जो मानवीय करुणा, विवेक, और नैतिक चेतना को पुनर्स्थापित करता है। कुंवर नारायण का काव्य–संसार मनुष्य की आत्मा के भीतर झाँकने का आमंत्रण है। उनकी कविताओं में मानव अस्तित्व की जटिलता, संघर्ष और विवेक, तथा समाज के नैतिक द्वंद्व का गहन चित्रण मिलता है। उन्होंने अपने काव्य में यह बताया कि "मनुष्य" का अर्थ केवल जैविक प्राणी नहीं, बल्कि एक चेतन, संवेदनशील और चिंतनशील इकाई है जो समय और इतिहास से संवाद करती है। आधुनिक युग में जहाँ भौतिक प्रगति के साथ मानवीय मूल्य संकट में हैं, वहाँ कुंवर नारायण की कविताएँ एक नैतिक विकल्प प्रस्तुत करती हैं। उनकी रचनाओं में अतीत और वर्तमान का सामंजस्य है, जहाँ इतिहास की स्मृति और भविष्य की चिंता एक साथ चलती है। कवि ने 'आत्मजयी' जैसे महाकाव्यात्मक काव्य में जीवन और मृत्यु के दार्शनिक प्रश्नों को प्रतीकात्मक रूप में प्रस्तुत किया, वहीं 'कोई दूसरा नहीं' और 'वाजश्रवा के बहाने' में उन्होंने मनुष्य की भीतरी यात्रा और सामाजिक आत्मालोचन का गहन विश्लेषण किया है। इस शोध का मुख्य उद्देश्य कुंवर नारायण की कविताओं में निहित मानवीय संवेदनाओं और आधुनिक चिंतन की प्रकृति, अभिव्यक्ति एवं सामाजिक प्रासंगिकता का अध्ययन करना है। यह शोध पूर्णतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है, जिसमें कवि के प्रमुख काव्य–संग्रहों के साथ समकालीन आलोचकों के विचारों का विश्लेषण किया गया है।

**मुख्य शब्द :** कुंवर नारायण, मानवीय संवेदना, आधुनिक चिंतन, नैतिकता, अस्तित्वबोध।

**प्रस्तावना :.**
आधुनिक हिन्दी कविता के इतिहास में बीसवीं सदी के उत्तरार्ध का काल एक गहन वैचारिक संक्रमण का युग रहा है। इस समय कविता मात्र भावनात्मक संप्रेषण का माध्यम नहीं रही, बल्कि वह समाज, इतिहास, राजनीति, और व्यक्ति के अस्तित्व से जुड़े प्रश्नों का दार्शनिक विमर्श बन गई। कुंवर नारायण आधुनिक हिन्दी कविता के उन चुनिंदा कवियों में हैं, जिनकी रचनाएँ जीवन और मानवता के बहुआयामी अनुभवों को एक दार्शनिक और मानवीय धरातल पर प्रस्तुत करती हैं। उनकी कविताओं में आधुनिक समाज की विडंबनाएँ, नैतिक संकट, युद्ध, हिंसा, और मानवता की करुणा एक साथ दिखाई देती हैं। इस दौर में अज्ञेय, मुक्तिबोध, शमशेर, रघुवीर सहाय जैसे कवियों के साथ कुंवर नारायण का नाम एक ऐसे कवि के रूप में उभरता है, जिनकी कविताएँ संवेदना और चिंतन दोनों का अद्भुत संतुलन प्रस्तुत करती हैं।

### जन्म व शिक्षा
कुंवर नारायण का जन्म 19 सितंबर 1927 को फ़ैज़ाबाद (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। उनकी शिक्षा लखनऊ वि ववविद्यालय से हुई और आगे चलकर वे हिन्दी साहित्य में अपनी गहरी अध्ययनशीलता, दार्शनिक दृष्टि, और मानवीय चिंतन के कारण पहचाने गए। उनका पहला काव्य–संग्रह "चक्रव्यूह" (1956) प्रयोगवादी कविता का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज़ माना जाता है। इसके बाद "आत्मजयी" (1959), "वाजश्रवा के बहाने" (1998), और "कोई दूसरा नहीं" (2003) जैसे संग्रहों ने उन्हें हिन्दी कविता का एक दार्शनिक कवि के रूप में स्थापित किया।
कुंवर नारायण की कविताएँ किसी वाद या आंदोलन से बँधी हुई नहीं हैं। वे किसी विचारधारा के अनुयायी नहीं, बल्कि विवेकशील मनुष्य के कवि हैं। उनकी दृष्टि में मानव जीवन का प्रत्येक पक्ष चाहे वह नैतिक हो, सामाजिक या

आध्यात्मिक एक निरंतर खोज की प्रक्रिया है। उनकी कविता में आधुनिकता का अर्थ पश्चिमी भोगवादी प्रवृत्ति नहीं, बल्कि आत्म–साक्षात्कार और विवेक की जागृति है। वे मनुष्य के भीतर की संवेदना, करुणा, और सह–अस्तित्व की भावना को पुनः जीवित करने का आग्रह करते हैं। जैसा कि वे स्वयं लिखते हैं–

"मनुष्य अगर मनुष्य न रहे,
तो सब कुछ व्यर्थ है–
ज्ञान, विज्ञान, सत्ता और सभ्यता भी।"[1] (कविता : "मनुष्य की तरह जीना")

इस पंक्ति में कवि की समस्त काव्य–दृष्टि निहित है– जहाँ केंद्र में मनुष्य और उसकी संवेदना है।

कुंवर नारायण के काव्य में आधुनिक युग की जटिलता– उपभोक्तावाद, नैतिक पतन, हिंसा, युद्ध और पर्यावरणीय असंतुलन जैसे विषयों का सूक्ष्म चित्रण मिलता है। लेकिन इन सबके बीच उनकी कविताएँ मनुष्य में छिपे आशा, वि वास और विवेक की ज्योति को जलाए रखती हैं। उनकी कविता 'आत्मजयी' में मृत्यु का भय नहीं, बल्कि जीवन के प्रति गहरा दार्शनिक दृष्टिकोण है। कवि यहाँ मृत्यु को अंत नहीं, बल्कि आत्मबोध की प्रक्रिया के रूप में देखता है। वहीं 'वाजश्रवा के बहाने' में पिता–पुत्र के संवाद के माध्यम से मानव जीवन के नैतिक प्रश्नों को पुनः परिभाषित किया गया है। कुंवर नारायण आधुनिक हिन्दी कविता में एक ऐसे कवि हैं जिन्होंने शब्दों को केवल सौंदर्य का माध्यम नहीं, बल्कि विवेक का साधन बनाया। वे जीवन को "समझने" की प्रक्रिया में कविता को एक दार्शनिक संवाद बना देते हैं।

इस शोध का लक्ष्य उनके काव्य में निहित उन संवेदनाओं और विचारों का विश्लेषण करना है जो आधुनिक समाज के नैतिक, बौद्धिक और मानवीय प्रश्नों को गहराई से छूते हैं। अध्ययन का केंद्रबिंदु यह है कि उनकी कविताओं में मानवीयता कैसे आधुनिक युग के संकटों के बीच अपनी प्रासंगिकता बनाए रखती है।

**कुंवर नारायण का काव्य–संसार और मानवीय दृष्टिः–**

कुंवर नारायण की कविताओं में "मनुष्य" के प्रति गहरी आस्था दिखाई देती है। वे हर युग में मनुष्य को उसके विवेक से जोड़ना चाहते हैं। उनके अनुसार –

"हम इतिहास के नहीं,
अपने विवेक के उत्तराधिकारी हैं।"[2]

यह पंक्ति आधुनिक मनुष्य की जिम्मेदारी का उद्घोष करती है। उनके लिए आधुनिकता का अर्थ यांत्रिक जीवन नहीं, बल्कि नैतिक जागरूकता और संवेदना की गहराई है। वे युद्ध, राजनीति और सत्ता की अमानवीयता के विरुद्ध खड़े होकर मनुष्य की आत्मा को आवाज देते हैं।

**मानवीय संवेदनाएँ : करुणा और सह–अस्तित्व का भाव :–**

कुंवर नारायण की कविताओं का केंद्र "करुणा" है। वे समाज में व्याप्त हिंसा और असमानता के बीच भी मानवता की रोशनी खोजते हैं। उनकी कविता "कोई दूसरा नहीं" में वे कहते हैं –

"मैं जब भी किसी और के बारे में सोचता हूँ,
अपने बारे में सोचता हूँ–
कोई दूसरा नहीं।"[3]

यह पंक्ति उनके मानवीय दर्शन का सार है– संपूर्ण मानवता एक है। वे "दूसरे" के दुख को "अपने" दुख के रूप में अनुभव करते हैं।

**आधुनिक चिंतन और अस्तित्वबोध :–**

कुंवर नारायण आधुनिक भारतीय कविता के उन विरल कवियों में हैं जिन्होंने युगीन विसंगतियों, सामाजिक विघटन और मनुष्य के आंतरिक विघटन को एक गहन दार्शनिक दृष्टि से देखा। उनकी कविताएँ आधुनिकता की आलोचना मात्र नहीं करतीं, बल्कि आधुनिक जीवन के उस बिंदु को छूती हैं जहाँ मनुष्य अपने ही बनाए संसार में असुरक्षित और अकेला हो गया है। आधुनिक सभ्यता ने मनुष्य को सुविधाएँ दी हैं, परंतु उससे उसका 'अस्तित्वबोध' छीन लिया है। कुंवर नारायण के लिए यह अस्तित्वबोध मात्र दार्शनिक अवधारणा नहीं, बल्कि मनुष्य के 'जीवित होने की सार्थकता' से जुड़ा प्रश्न है। वे लिखते हैं –

"अब आदमी का सबसे बड़ा डर
आदमी से ही है।"[4]

यह चिंतन हमें समकालीन सभ्यता की भयावहता से रूबरू कराता है। कुंवर नारायण आधुनिक चिंतन को 'संवेदनशील विवेक' के रूप में देखते हैं– जो परंपरा और नवता के बीच संतुलन बनाए रखता है।

**इतिहास, मिथक और मानवता का संबंध :–**

कुंवर नारायण की काव्यदृष्टि की एक विशेषता यह है कि वे इतिहास और मिथक को केवल अतीत के प्रतीक रूप में नहीं, बल्कि मानवता के निरंतर प्रवाह के रूप में देखते हैं। उनके लिए इतिहास एक गतिशील प्रक्रिया है, जो हर युग में नए अर्थ ग्रहण करती है। इसीलिए उनकी कविता में मिथक, आधुनिक जीवन की व्याख्या का माध्यम बन जाता है। उनका प्रसिद्ध काव्य "आत्मजयी" इस दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इसमें ययाति का मिथक केवल पुराणकथा नहीं, बल्कि आधुनिक मनुष्य की भोगलालसा, असंतोष और अस्तित्व की विडंबना का प्रतीक है। कवि कहते हैं –

"वह जीना चाहता था
पर समझ नहीं पाया कि जीना क्या है।"[5]

यह पंक्ति आधुनिक मनुष्य के उस मोहभंग को उद्घाटित करती है जहाँ वह जीवन को केवल उपभोग और अधिकार की दृष्टि से देखता है, न कि अनुभव और कर्तव्य की दृष्टि से। ययाति का मिथक यहाँ समय और असमय के द्वंद्व का प्रतीक बन जाता है– वह अमरत्व चाहता है, परंतु मृत्यु के भय से नहीं, बल्कि जीवन के अर्थ की अनभिज्ञता से।

**कुंवर नारायण का नैतिक और दार्शनिक चिंतन :–**

कुंवर नारायण का काव्य–संसार केवल संवेदना का नहीं, बल्कि नैतिक विवेक और दार्शनिक गहराई का संसार है। वे किसी विचारधारा के कवि नहीं हैं, बल्कि "मूल्यवान मानवीयता" के कवि हैं। उनका मानना है कि कविता केवल सौंदर्य की सृष्टि नहीं करती, बल्कि जीवन के प्रति जिम्मेदारी की भावना भी जगाती है। वे कहते हैं–

"जीवन को समझने का एक ही तरीका है,
उसे मानवीय दृष्टि से देखना।"[6]

यह पंक्ति उनके समूचे काव्य–दर्शन की दिशा निर्धारित करती है। उनके लिए मनुष्य का मूल्य उसकी उपलब्धियों में नहीं, बल्कि उसकी करुणा और विवेक में है। उनकी कविताओं में बार–बार यह आग्रह मिलता है कि जीवन को समझने के लिए बाह्य जगत नहीं, आंतरिक दृष्टि आवश्यक है। उनका नैतिक चिंतन किसी उपदेशात्मक रूप में नहीं, बल्कि आत्मानुभव के रूप में व्यक्त होता है। वे मनुष्य को "अच्छा बनने" का नहीं, बल्कि "सजग रहने" का आग्रह करते हैं। यह सजगता ही नैतिकता की पहली शर्त है। उनकी कविता "अयोध्या का रास्ता" में यही सजगता एक प्रतीक के रूप में उभरती है, जहाँ अयोध्या केवल भौगोलिक स्थान नहीं, बल्कि मनुष्य के भीतर की शांति और न्याय की खोज है।

**इतिहास–समाज का मानवीय दृष्टिकोणः–**

कुंवर नारायण अकेले "व्यक्ति" तक नहीं रुके; वे इतिहास और समाज की घटनाओं को मानव चेहरे से पढ़ते हैं । युद्ध–विरोध, सत्ता के दमन, शहरी अकेलापन, विध्वंस के बाद के भाव–ये सब उनके काव्य में मानवीय दृष्टि से आते हैं। बड़े सामाजिक प्रश्नों को उनके काव्य में 'मानव पीड़ा' की कसौटी पर परखा जाता है।कुंवर नारायण के यहाँ केंद्र में हमेशा "व्यक्ति" होता है ,उसकी आंतरिकता, क्षणिक पीड़ा, स्मृति, अपेक्षा और अकेलापन। वे बड़े–छोटे अनुभवों को मौलिक मान लेते हैं । साधारण दृश्य (एक रास्ता, एक खिड़की, कोई बुजुर्ग, कोई बच्चा) उनके लिए मनुष्य की संवेदना के दरवाज़े होते हैं। इसलिए उनकी संवेदना वैयक्तिक होने के साथ–साथ सार्वभौमिक भी बन जाती है । व्यक्तिगत क्षण बड़े मानवीय प्रश्नों से जोड़ दिए जाते हैं।उनकी कविता में सहानुभूति सिर्फ भावना नहीं बल्कि नैतिक प्रतिक्रिया भी होती है। वे अन्याय, विडंबना, युद्ध–विरोध, गरीब–मज़दूर की दशा, महत्त्वहीन जीवन–कुतुहल को न केवल देख करते हैं बल्कि इन पर विचार कर के मनुष्य का दायित्व पूछते हैं। इस तरह उनकी संवेदना में करुणा के साथ–साथ न्याय और जवाबदेही की गुंजन रहती है।उनकी भाषा साधारण–सी दिखती है पर अर्थ में गहरी और बहुस्तरीय है। छोटे वाक्य, विरामों का प्रयोग, वृद्धि–रोधी शब्दविन्यास से वे पाठक के भीतर संवेदना जगाते हैं। इमेजरी (दृश्य, गंध, स्पर्श) बहुत संवेदनशील और यथार्थ परक होती है , इसलिए पाठक सहज रूप से जुड़ जाता है। उनकी कविताएँ अक्सर कम शब्दों में बहुत कुछ कह जाती हैं । यही मानवीय संवेदना का घनत्व है।कुंवर नारायण प्रतीकों का इस्तेमाल करते हुए सीधे–सीधे "मानव" को नहीं बदलते; पर रोज़मर्रा की वस्तुएँ, मौसम, अनुहार, घर, सड़क आदि मानवीय भावों की प्रतीक भाषा बन जाते हैं। यह प्रतीकवाद उनकी संवेदना को छाप देता है। पाठक थोड़े संकेतों से बड़ी भावना समझ लेता है।उनकी कविताओं में स्मृति और समय का खेल बार–बार आता है । बीते हुए अनुभवों में मानवीय संवेदना

गहरे उतरती है। वे समय की क्षरणशीलता से जुड़ी संवेदनशीलता दिखाते हैं । उम्र, भूल, विरह, और नाजुकता का अहसास।

**निष्कर्ष :–**

कुंवर नारायण की कविताएँ आधुनिक मनुष्य के बौद्धिक, नैतिक और भावनात्मक संसार की सशक्त अभिव्यक्ति हैं। उन्होंने मानवीय संवेदनाओं को गहराई से जिया और आधुनिक चिंतन के माध्यम से मनुष्य को स्वयं के प्रति जिम्मेदार बनने का संदेश दिया। उनकी कविताएँ आज के हिंसक, भौतिकवादी समाज में भी "संवेदना" और "विवेक" की लौ को जलाए रखती हैं।

**संदर्भ सूची**

1. नारायण, कुंवर, (2003), कोई दूसरा नहीं, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, पृ. 47।
2. नारायण, कुंवर, (2010), अयोध्या का रास्ता, दिल्ली : भारतीय ज्ञानपीठ, पृ. 12।
3. नारायण, कुंवर, (2003), कोई दूसरा नहीं, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, पृ. 21।
4. नारायण, कुंवर, (1998), वाजश्रवा के बहाने, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, पृ. 63।
5. नारायण, कुंवर, (1959), आत्मजयी। नई दिल्ली : लोकभारती प्रकाशन, पृ. 45।
6. नारायण, कुंवर, (2010), अयोध्या का रास्ता, दिल्ली : भारतीय ज्ञानपीठ, पृ. 19।
7. मिश्र, नामवर सिंह, (1977), कविता के नये प्रतिमान, दिल्ली : राजकमल प्रकाशन।
8. शुक्ल, रामस्वरूप, (1988), नई कविता का मूल्यांकन, प्रयागराज : साहित्य भवन।
9. द्विवेदी, हजारीप्रसाद, (1972), आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ, वाराणसी : साहित्य अकादमी।
10. शर्मा, लक्ष्मीकांत, (2015), कुंवर नारायण का काव्य–संसार, नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन।